अजायब बानी

मासिक पत्रिका

फरवरी-2024

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–इक्कीसवां	अंक–दसवां	फरवरी–2024

3 परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
परमात्मा का शुक्राना

11 परम सन्त कृपाल सिंह महाराज द्वारा प्रेमी के सवालों के जवाब
वास्तव में बहुत कम लोग घर वापिस जाना चाहते हैं

19 सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
परमात्मा की भक्ति

31 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
कंजूस

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ.सुखराम सिंह नौरिया**
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 263 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

अज जग विच खुशियां वसियां ने

हुजूर कृपाल सिंह जी महाराज के शुभ जन्मदिवस 6 फरवरी पर सारी संगत को लख–लख बधाईयां

अज जग विच खुशियां वसियां ने, x 2

1. *सच्चा नूर जगत विच आया ऐ, गुलाब देवी दी कुख तों जाया ऐ, x 2*
कृपाल जी नाम रखाया ऐ, चन्न चढ़े ते रिश्मां हसियां ने,
अज जग विच .....

2. *पिता हुक्म सिंह दा प्यारा ऐ, दुनियां दा बणया सहारा ऐ, x 2*
सच्चे नाम दा लाया नारा ऐ, रूहां मैलियां तो कीतियां अच्छियां ने,
अज जग विच .....

3. *दुनियां च अंधेरा छाया ऐ, सतनाम दा चक्कर लाया ऐ, x 2*
देसां–परदेसां च छाया ऐ, रूहां कढियां जो काल ने डस्सियां ने,
अज जग विच .....

4. *सावन तों सच्चा नाम लया, लक्ख वार उस तों कुरबान गया, x 2*
सतगुरु दी शरणी आण पया, आसां सावन दियां रखियां ने,
अज जग विच .....

5. *कोई जन्म दिहाड़ा मनौंदा ऐ, कोई बर्थ–डे कह के गौंदा ऐ, x 2*
'अजायब' कृपाल नूं चौहंदा ऐ, मनियां जो बातां सच्चियां ने,
अज जग विच .....

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

परमात्मा का शुक्राना

कैलीफोर्निया- अमेरिका

आज हम सबके लिए **परमात्मा का शुक्राना** करने का दिन है। आज हर व्यक्ति को खड़े होकर परमात्मा का शुक्राना करना चाहिए सिर्फ इसी क्षण नहीं बल्कि हर रोज, हर क्षण हमें परमात्मा का शुक्राना करना चाहिए। शुक्राना करने का सबसे बड़ा कारण यह है कि परमात्मा ने हमें यह मानव देह दी है। निचले जामों में हम कुछ नहीं कर सकते थे, मानव देह एक सुनहरी मौका है जिससे हम वापिस अपने घर जा सकते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''हमें जीवन के हर क्षण परमात्मा का शुक्राना करना चाहिए।'' आप जब खाना खाते हैं, **परमात्मा का शुक्राना**

करें। आप अपनी तुलना उन लोगों से करें जिन्हें भोजन का एक निवाला भी हासिल नहीं होता। आपको रहने के लिए घर मिला हुआ है, आप परमात्मा का शुक्राना करें। जो लोग सड़कों पर रहते हैं, आप अपनी तुलना उनसे करें अगर आप अमीर हैं तो भी परमात्मा का शुक्राना करें।

अगर आप भूखे हैं तब भी **परमात्मा का शुक्राना** करें। आपके पास भविष्य के जीवन के बारे में और परमात्मा के बारे में सोचने के लिए अच्छी बातें हैं, आप परमात्मा का शुक्राना करें। यहाँ बहुत से ऐसे भी लोग हैं जो परमात्मा में यकीन ही नहीं करते। कबीर साहब कहते हैं, ''हर एक श्वांस जो हम लेते हैं वह तीनों लोकों के मूल्य के बराबर है, हमें परमात्मा का शुक्राना करना चाहिए।''

एक बार धरती से पूछा गया कि तुम्हारे ऊपर पहाड़, नदियाँ, जानवर, पेड़ और इंसान हैं इन सबका बहुत बोझ है, तुम इन सबका बोझ कैसे उठा लेती हो? धरती ने जवाब दिया, ''यह मेरे लिए कोई बोझ नहीं लेकिन जब कोई नाशुक्रा इंसान मेरे ऊपर चलता है तो मुझसे उसका बोझ बर्दाश्त नहीं होता।''

हमें जो वस्तु मिली है उसके लिए आज के दिन ही नहीं बल्कि हमें हर क्षण **परमात्मा का शुक्राना** करना चाहिए। हमारे पूर्वजों के पास रहने के लिए जमीन थी, उस जमीन पर फसल पैदा होती थी। आप जानते हैं कि फसल तो हर रोज पैदा हो रही है जोकि अब पहले से भी ज्यादा पैदा हो रही है तो हमें परमात्मा का ज्यादा शुक्राना करना चाहिए। परमात्मा ने हमें मानव देह दी है जिसमें हम वापिस अपने घर जा सकते हैं।

हम जो काम करते हैं जो कुछ खाते–पीते हैं जिनके साथ मेल–जोल रखते हैं, इन सभी बातों के लिए हमेशा **परमात्मा का शुक्राना** करना चाहिए। इंसान शुक्राना कब कर सकता है? जब वह ऊँची ताकत

के कार्यरत होने का अहसास करे, क्या आपको उसका अहसास है? आपके पास शुरू करने के लिए कुछ पूँजी है, कोई ताकत आपकी संभाल करने के लिए है। परमात्मा के प्रकट स्वरूप को संपर्क में लाकर आपके सभी कर्मों के लेन–देन का भुगतान करवाने वाला सतगुरु है।

आज अच्छी फसलें हो रही हैं, पेड़ों पर फल उग रहे हैं और भी बहुत कुछ हो रहा है। हमें इन सारी वस्तुओं के लिए रोजाना परमात्मा का शुक्राना करना चाहिए। आप परमात्मा का शुक्राना करें कि मैं आपके पास आया हूँ, यह परमात्मा की दया है। अगर आप यह सोचते हैं कि आपको मुझसे कुछ थोड़ा सा अच्छा मिला है तो वह भी परमात्मा की दया के जरिए से ही मिला है।

क्राईस्ट ने कहा है, ''अगर आप मुझसे प्रेम करते हैं तो मेरे वचनों का पालन करें। ब्रह्मचर्य का जीवन धारण करें, सदाचार का जीवन धारण करें सबसे प्रेम करें।'' कोई पाखंड नहीं कि आपका दिल कुछ और महसूस करता है और आपकी जुबान कुछ और बोलती है दिमाग कुछ और ही सोच रहा है, यह शुक्राना करना नहीं है।

हमारे लिए बाकी बचे हुए दिन निश्चित हैं, वे शुक्राना करने के दिन हैं। हमें परमात्मा का हर चीज के लिए शुक्राना करना चाहिए। अब आपको इस मार्ग पर डाल दिया गया है, आप ज्यादा शुक्राना कैसे करेंगे? इस पर अमल करते हुए या इसे छोड़ते हुए?

मेरे 75 वें जन्मदिन पर डायमंड जयंती मनाई गई। भारत व बाहर से कई धर्मों के लोग वहाँ आए और उन्होंने बहुत ऊँची–ऊँची बातें की। जब कोई लेक्चर देने लगता है चाहे आप उस लायक हैं या नहीं तो वह बड़ी ऊँची–ऊँची बातें करता है। मैं जब खड़ा हुआ तो मैंने कहा, ''प्यारे मित्रों, आप मेरे इन मित्रों से बहुत बड़ी–बड़ी बातें सुन चुके हैं लेकिन

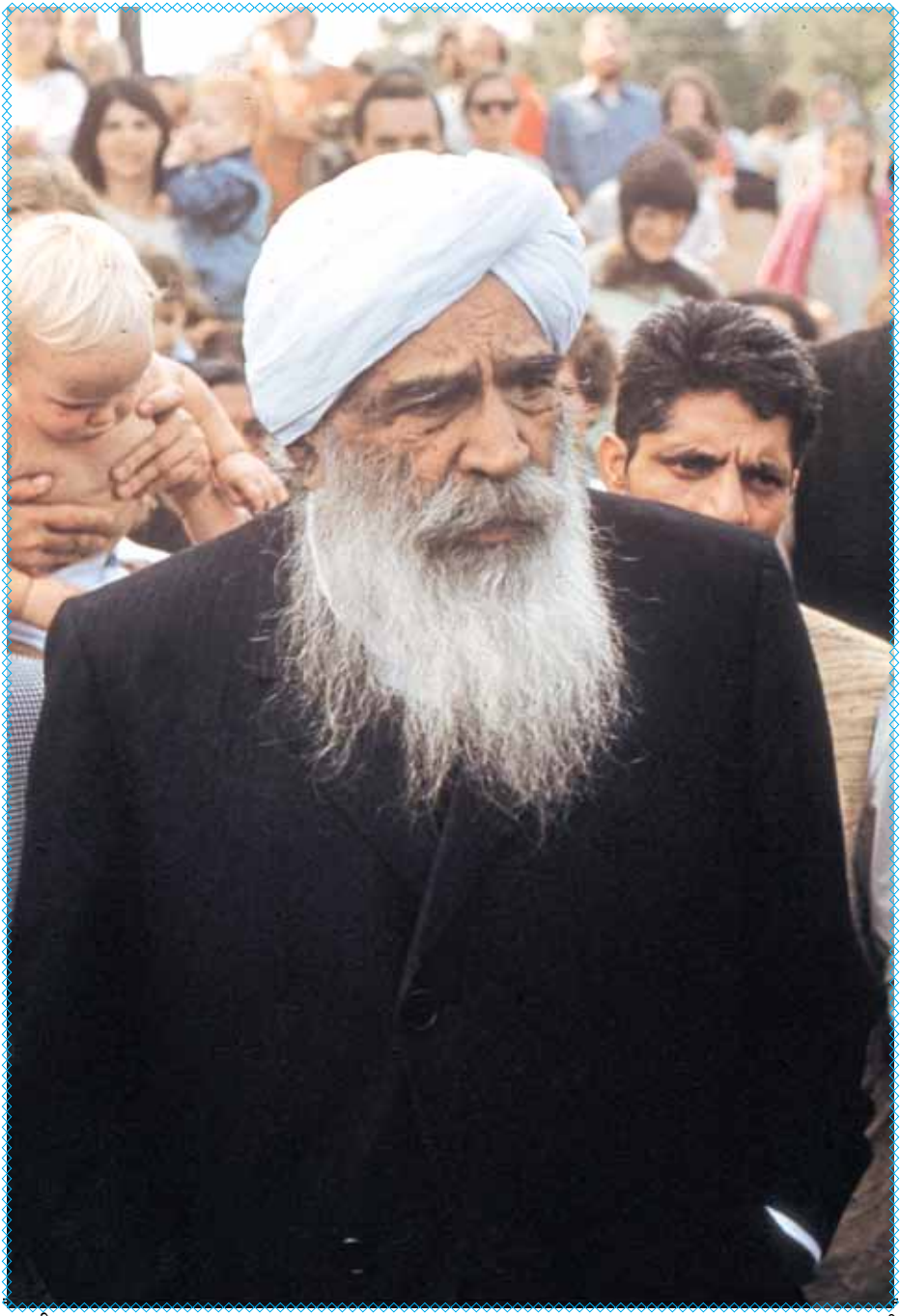

सच्चाई यह है इन्होंने जो कुछ कहा है, मैं उसके लायक नहीं हूँ। वह सब मैं अपने गुरु के आगे भेज रहा था, यह सब उनकी दया है। यह परमात्मा की रहमत है, उस गुरु की कृपा है कि आपको यह मार्ग मिला है।''

आज से हर वस्तु के लिए शुक्राना करें लेकिन हम क्या करते हैं, एक वस्तु जो हमारे पास नहीं उसकी वजह से बाकी वस्तुएं जो हमारे पास हैं उनके लिए शुक्राना करना भूल जाते हैं। किसी से भी पूछें वह कहता है कि मेरे पास वह वस्तु नहीं लेकिन उन सब वस्तुओं का क्या जो हमारे पास हैं। जो भेड़ ज्यादा मिमयाती है उसके मुँह से उतना ही ज्यादा भोजन बाहर निकल जाता है। जो मिला है उसके लिए शुक्राना करें।

हम हमेशा परमात्मा के आगे शिकायत करते हैं कि मुझे यह नहीं मिला, वह नहीं मिला। पिछले कर्मों के फलस्वरूप हमें जो भी मिला है उसके लिए परमात्मा के शुक्रगुजार बनें। परमात्मा का सबसे बड़ा शुक्राना यह है कि उसने हमें मनुष्य का जामा दिया है और उससे आगे वह भी शुक्राना करने का महान दिन है जब आपको वापिस परमात्मा के पास जाने वाले मार्ग पर डाला गया है।

सारे संसार में शांति हो। मेरे ख्याल से आज से आप अपने घर वापिस जाने के लिए भजन में ज्यादा समय लगाने की कोशिश करेंगे, आप जितनी जल्दी वहाँ पहुंचेंगे, आपके लिए बेहतर होगा। क्राईस्ट ने कहा है, ''जिसने मुझे यहाँ भेजा है मुझे उसका काम दिन रहते हुए करना है, रात आने वाली है।'' रात कब आती है? जब आप शरीर छोड़ जाते हैं, दिन तभी तक है जब तक आप जीवित हैं।

हमें हर चीज के लिए **परमात्मा का शुक्राना** करना चाहिए। कभी–कभी अवाँछनीय चीजें भी आ जाती हैं जो हमारे अपने कर्मों का ही प्रतिकर्म है और हम उनका भुगतान कर रहे हैं। जब किसी चीज की

कमी होती है तो हम खफा हो जाते हैं लेकिन जो मिला है उसके लिए **परमात्मा का शुक्राना** नहीं करते।

परमात्मा हमारा सच्चा पिता है, वह हमारे सभी कर्मों का भुगतान करता है। हमें उसका शुक्राना करना चाहिए कि हम इस जीवन में सारा कर्ज उतारकर वापिस अपने घर जा रहे हैं। अगर हम परमात्मा के साथ नहीं जुड़ते, संसार की भौतिक वस्तुओं के साथ जुड़ते हैं तो स्वाभाविक है कि हमारी चेतनता कम हो जाएगी, हम निचले जामों में चले जाएंगे।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''उसे ही जिंदा समझें जिसे परमात्मा का ज्ञान है, जो परमात्मा को आमने–सामने देखता है। जैसे हम एक–दूसरे को देखते हैं और जो उसे नहीं देखते वे मृत हैं।'' हमें आभारी होना चाहिए कि हमें मानव देह प्राप्त है जो सबसे ऊँची बख्शिश है। अब हमें इस मार्ग पर डाल दिया गया है।

अब हमें क्या करना चाहिए? आप गुरु के हुक्म का पालन करें और ज्यादा से ज्यादा उस सर्व चेतनता के साथ जुड़ें। अगर आपने मानव तन पाकर जोकि परमात्मा का सच्चा मंदिर है, उस परमात्मा को नहीं पाया तो आपके सभी कर्म, पढ़ाई–लिखाई, खाना–पीना, मौज–मस्ती, शरीर को सजाना–सँवारना ये सब इस तरह हैं जैसे किसी मुर्दा लाश को सजा–सँवार रहे हैं। आपको मानव देह मिली है, इसका ऊँचा लक्ष्य परमात्मा को जानना है।

इंसानी जामें के दो मकसद हैं। पिछले जन्मों से चले आ रहे कर्ज का भुगतान करना और इसके आगे का मकसद है परमात्मा को जानना, परमात्मा से प्रेम करना, प्रेम हर हृदय में बसता है। हमें सबसे प्रेम करना चाहिए अगर हम ऐसा नहीं करते तो सन्त कहते हैं, ''पशु–पक्षी और रेंगने वाले कीड़े–मकोड़े हमसे बेहतर हैं।''

हमें मानव देह मिली है और हमने कुछ नहीं किया। आपको ये सब बख्शिशें किसी सन्त स्वरूप से मिलकर ही प्राप्त हो सकती हैं। जब आप किसी सन्त के पास जाते हैं तो वह आपको परमात्मा के साथ मिला देता है। सभी सन्त कहते हैं कि आपको अपने पैरों पर खड़े होना चाहिए।

परमात्मा की कलम से लिखे हुए लेख जो आपसे जुड़े हैं उनका सारा कर्ज उतार दें और दूसरों की मदद भी करें। आप जो भी कर्म–धर्म, रीति–रिवाज कर रहे हैं ये जमीन की तैयारी मात्र है। जिसके लिए आप ये सब तैयारी कर रहे हैं अगर वह आए ही न तो आपका क्या भविष्य है?

परमात्मा ज्योति है, आकाशमंडल का संगीत है। हम मोमबत्ती जलाते हैं, घंटा बजाते हैं ये सब परमात्मा के चिह्न हैं, परमात्मा को देखना नहीं। ये आपको अच्छा परिणाम देंगे क्योंकि ये परमात्मा के नाम पर किए गए कर्म हैं अगर 'मैं करता हूँ' कि भावना नहीं गई तो यह अहंकार है। अच्छे ख्याल अच्छा परिणाम लाएंगे, बुरे ख्याल बुरे परिणाम लाएंगे। सन्त कहते हैं कि जो कर्म आपको परमात्मा के नजदीक ले जाते हैं, वे अच्छे कर्म हैं और जो कर्म आपको परमात्मा से दूर ले जाते हैं, वे बुरे कर्म हैं।

जैसा बोवोगे वैसा काटोगे।

आप देखें, कोई चीज एक धर्म में अच्छी है लेकिन वही चीज दूसरे धर्म में अच्छी नहीं मानी जाती। सिक्खों के गुरुद्वारे में नंगे सिर बैठना अनादर का सूचक है लेकिन चर्च में नंगे सिर बैठना आदर का प्रतीक है।

हम इस मानव देह में सुबह से शाम तक एक उम्र कैदी की तरह काम करते हैं जबकि हाथ–पल्ले कुछ भी नहीं आता। आप किसी सन्त से मिलें और उससे जानें कि आपके कितने ऊँचें भाग्य हैं। आपको इंसानी जामा मिला है और इससे भी ज्यादा ऊँचा भाग्य हमारा इंतजार कर रहा है जब हम मानव देह में प्रकट भगवान के संपर्क में आए।

आपके अंदर पहले से ही परमात्मा मौजूद है, सन्त आपको आपके अंदर वाले परमात्मा के साथ जोड़ते हैं। हम बाहरी दुनिया में खोकर परमात्मा को ही भूल गए। आप जब तक अपने आप में सिमटकर अपने आपको नहीं पहचानेंगे, तब तक परमात्मा को कैसे जान पाएंगे? परमात्मा सन्तों के जरिए ही मिलता है। बंद आँखों वाला आदमी खुली आँखों वाले को कैसे देख सकता है?

जब परमात्मा आपके अंदर तड़प देखता है कि आप उसके बिना नहीं रह सकते तो वह आपको अपने संपर्क में लाने का इंतजाम करता है, वह आपके पास आता है। आप नहीं जानते कि वह कौन है? लेकिन वह हमें मौका देता है। जब हम सतसंग सुनते हैं तो हम उस ओर आकर्षित होते हैं और मार्ग पर डाल दिए जाते हैं।

आज शुक्राना करने का दिन है, **परमात्मा का शुक्राना** करें, शुक्राना न करना घोर अपराध है। अगर हम आज से यह सबक सीख लें कि परमात्मा ने हमें जो वस्तुएं दी हैं, हम उसके लिए शुक्राना करें। अगर आपके तीन, चार या पाँच बच्चे हैं और वे सभी आपस में लड़ रहे हैं कि मुझे यह नहीं मिला वह नहीं मिला लेकिन उनको बहुत कुछ मिला है। उनमें एक ऐसा बच्चा भी है जो कहता है, ''पिता जी, धन्यवाद आपने मुझे ये वस्तुएं दी हैं।'' पिता को कौन सा बच्चा पसंद आएगा?

परमात्मा वापिसी में हमसे कुछ भी नहीं चाहता। हमें जो मिला है हम उसके लिए तो आभारी हों, हमें नाशुक्रा नहीं होना चाहिए। मेरे ख्याल से यह एक महान गुण है अगर आप आज से ही इसे धारण करेंगे तो आप जल्दी ही बहुत ज्यादा तरक्की करेंगे।

***

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमी के सवालों के जवाब

वास्तव में बहुत कम लोग घर वापिस जाना चाहते हैं

13 सितम्बर 1970 देहरादून

***एक प्रेमी** : मैं चाहता हूं कि आप हमें सच्चखंड में हमारे घर के बारे में कुछ बताएं?*

***महाराज जी** :* अगर आपने कोई खूबसूरत इमारत या किसी राजा का महल देखा हो और फिर आप किसी छोटे से गांव में ईंटों से बना हुआ मकान देखें, इसी तरह आप कुछ समय सूक्ष्म मंडल में बिता सकते हैं। कारण मंडल में इससे भी बहुत कम समय बिता सकते हैं, ये अनुभव करने की बातें हैं। जिस मंजिल पर परमात्मा अपने पूरे रूप में प्रकट होता है वह सच्चखंड है।

यह केवल रूहानी मंडलों में अनुभव किया जा सकता है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण मंडल हैं और उनके आगे रूहानी मंडल है। आपको कुछ हद तक सूक्ष्म व कारण मंडलों का तुच्छ विवरण दिया जा सकता है लेकिन उसके आगे का हाल इस भाषा में नहीं समझा जा सकता।

***एक प्रेमी** : वहां का रहना कैसा है?*

***महाराज जी** :* वह समुंद्र में पानी के एक बुलबुले की तरह है, यह कभी–कभी सतलोक तक पाया जाता है। वह चमकती हुई बहुत तेज पूर्ण रोशनी है, उसकी तुलना सूक्ष्म या कारण मंडलों की रोशनी से नहीं की जा सकती। अगर आप उस जगह दाखिल होंगे तो ऐसा है जैसे रोशनी के फव्वारे फूट रहे हैं। उसके आगे सतलोक में प्रवेश करने वाला गलियारा है।

***एक प्रेमी** : हम उसे क्यों छोड़ आए, हमारे पास कोई विकल्प था?*

***महाराज जी** :* परमात्मा ने यह संसार बनाया है, उसने हमें संसार में भेजा है। सवाल यह है कि उसने हमें यहां क्यों भेजा है? मेरे ख्याल से यह बेहतर होगा कि हम उसके पास जाएं और उसी से यह पूछें, तब आपको पता लग जाएगा कि परमात्मा ने हमें यहां क्यों भेजा है?

असल में हम कैदखाने में हैं, हमारा घर जल रहा है। बेहतर होगा कि पहले हम अपना घर बचाएँ फिर पूछें कि घर को आग किसने लगाई। ऊपर उठें, उसके मंडल में पहुंचे फिर आपको बहुत कुछ जानने को मिलेगा। आखिरकर हमें यह पता चलेगा कि यह उसकी मौज है, उसने यह संसार क्यों बनाया है?

***एक प्रेमी** : क्या यह काल के देश को आबाद रखने के लिए है?*

***महाराज जी** :* उसने हमें किस कारण भेजा है? कभी हम उसकी गोद में थे यह उसकी मौज थी और यह उसी ने चाहा था। मान लो मैं हिन्दुस्तान से अमेरिका जाता हूं तो मुझे अमेरिका में वहां के कानून का पालन करना पड़ेगा। यह भी कुछ ऐसा ही है। एक बार हमारे हुजूर से भी यही सवाल पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया, ''यही बेहतर होगा चलो, हम उसके पास चलते हैं और उससे ही पूछते हैं।''

***एक प्रेमी** : हिन्दुस्तान के दर्शन शास्त्रों के कुछ पहलुओं में इसका वर्णन इस तरह किया गया है जैसे परमात्मा अपने आप आनन्द ले रहा है?*

***महाराज जी** :* यह अपने आपको व्यक्त करने का एक तरीका है। परमात्मा अपने आप आनन्द ले रहा है, क्या आपने भी कभी अपने आपसे आनन्द लिया है अगर ऐसा किया है तो आप छोटे आकार के परमात्मा हैं, सूक्ष्म भगवान हैं। परमात्मा कहता है कि संसार आनन्द है। इसका मतलब यह है कि परमात्मा बहुत अकेला था तो वह आनन्द

महसूस करने के लिए कोई रचना चाहता था। उसने यह संसार क्यों बनाया, उसने हमें यहां क्यों भेजा? यह उसकी मौज थी। वह पहला कर्म जिसके प्रतिकर्म के रूप में हमें नीचे भेजा गया जबकि हमने कुछ गलत नहीं किया था। इस संसार में हम जो कुछ बीजते हैं, उसे काटते हैं। यह मेरे नहीं हुजूर के शब्द हैं, ''हम वही काट रहे हैं जो हमने बीजा है।''

***एक प्रेमी** : आप यह तो उम्मीद करते हैं कि शायद मन के मंडल या कारण मंडल की चोटी पर जाकर हमें इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा?*

***महाराज जी** :* उससे भी आगे, वहां भी नहीं। वहां तक जाने से हम केवल अपने पिछले जन्मों के प्रतिकर्म जान सकेंगे।

***एक प्रेमी** : क्या सच्चखंड में इसका उत्तर उपलब्ध है?*

***महाराज जी** :* यह जानकारी आप कारण मंडल में भी प्राप्त कर सकते हैं लेकिन सवाल यह है कि हमें इस संसार में क्यों भेजा गया? परमात्मा ने हमें संसार में भेजा है और इसका जवाब परमात्मा ही दे सकता है। जब हमने कुछ गलत किया ही नहीं तो उसने हमें यहां क्यों भेजा। क्या यहां भेजने से पहले हमने कोई पाप किया था?

***एक प्रेमी** :* पुरानी धर्मपुस्तक *बाइबल में आदम और हव्वा के विवरण को कैसे माना जाए?*

***महाराज जी** :* बाइबल के एक अध्याय में आदम और हव्वा का नाम दर्ज है। यह सृष्टि कैसे अस्तित्व में आई। आइऐ, मैं आपको बताता हूँ। क्या फल से पहले बीज था या बीज से पहले फल आया? मुर्गी से पहले अंडा आया या अंडे से पहले मुर्गी आई? इसका कोई जवाब नहीं है, यह सब माया है और माया का प्रभाव है। यह केवल एक अवस्था है कि एक आदमी है और एक औरत है। कहते हैं कि आदम पहले था और हव्वा बाद में हुई, उसने पेड़ का फल खाया। परमात्मा नीचे आया

और उसने अपने अंदर से हव्वा की उत्पति की। प्यारे मित्र अगर तुम्हें पता चल भी जाए तो उससे तुम्हें क्या मदद मिलेगी? तुम्हारा घर तो जल रहा है। आओ, इससे बाहर निकलें।

एक प्रेमी : हम सभी उस घर से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन हमारे पैर वहां मिट्टी में फँसे हुए हैं?

महाराज जी : सच तो यह है कि हम बाहर आना ही नहीं चाहते।

एक प्रेमी : आप कह रहे हैं कि ज्यादातर लोग कोशिश नहीं कर रहे?

महाराज जी : यह खूबसूरत शरीर जो हमने धारण किया हुआ है। सभी बंधन, रिश्ते–नाते, ये मकान, कारें और सब कुछ लेकिन ज्यादातर लोग इन्हें छोड़ना ही नहीं चाहते।

एक प्रेमी : यहाँ जो लोग कोशिश कर रहे हैं, उनमें से ज्यादातर लोगों के लिए इन सभी चीजों को छोड़ पाने की संभावना है?

महाराज जी : जिन लोगों ने यह मार्ग अपना लिया है, वास्तव में उनमें से बहुत कम लोग वापिस जाना चाहते हैं। वे अभ्यास में समय लगाते हैं फिर भी फंसे हुए हैं। वे परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें यहां संसार का कुछ मिले और आगे भी प्राप्त हो। **वास्तव में बहुत कम लोग अपने घर वापिस जाना चाहते हैं।**

एक प्रेमी : यहां हममें से कितने प्रतिशत कामयाब हो जाएंगे?

महाराज जी : जो बीज बीजा गया है वह फल देता ही है।

एक प्रेमी : मुझे बताएं इस वर्ष कितने प्रतिशत कामयाब हो जाएंगे?

महाराज जी : आपको उससे क्या मदद मिलेगी?

एक प्रेमी : मैंने आपका लिखा हुआ एक लेख पढ़ा है जिसमें यह कहा गया है कि कामयाब होने में तीन–चार जन्म लगते हैं?

महाराज जी : मैंने ऐसा कभी नहीं लिखा, आपने यह और सन्तों की लेखनियों में पढ़ा होगा। मैं कहता हूँ कि एक जन्म में चार मंजिलें भी पार की जा सकती हैं, चार जन्म जरूरी नहीं।

एक प्रेमी : हां जी, आपने उस लेख में यह भी कहा है?

महाराज जी : मुक्ति मार्ग के चार चरण हैं। पहले चरण में इंसान भूखा है। वह जब गुरु से मिलता है तो गुरु उसे नाम के साथ जोड़ देता है। नामलेवा को गुरु के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होना चाहिए। विकास करने के ये विभिन्न चरण हैं। भूख लगी है रोटी मौजूद है, वह रोटी खाकर तृप्त हो जाता है, चार जन्म जरूरी नहीं हैं। कुछ लोग ज्यादा तैयार हैं कुछ लोग उसकी तुलना में कम तैयार हैं लेकिन इंसान एक ही जन्म में इन चार चरणों से गुजर सकता है। हम यह देखते हैं कि चार चरणों की जरूरत है लेकिन कुछ लोग इसकी व्याख्या अलग तरह से करते हैं।

एक प्रेमी : क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे यथार्थ रूप में किसी के लक्ष्णों का मूल्यांकन करके यह पता लगाया जा सके कि उसने शायद पहला या दूसरा मंडल पार कर लिया है? *क्या वे मन व सूक्ष्म मंडलों को पार करके ज्यादा पवित्र बन जाते हैं?*

महाराज जी : मुझे पश्चिम से एक महिला ने पत्र लिखा कि वह त्रिकुटी पार कर गई है। मैंने उससे प्रश्न पूछा तो उस महिला ने उस मंडल के बारे में कुछ अस्पष्ट ख्यालों वाला उत्तर दिया जो कुछ उसे अनुभव हुआ वह पूरा नहीं था।

एक प्रेमी : जहां वह महिला गई होगी, वह मन के मंडल का ऊपरी हिस्सा होगा?

महाराज जी : यहां भी ऐसे लोग हैं जो तरक्की करते हैं, पश्चिम में भी हैं लेकिन हैं तो सही।

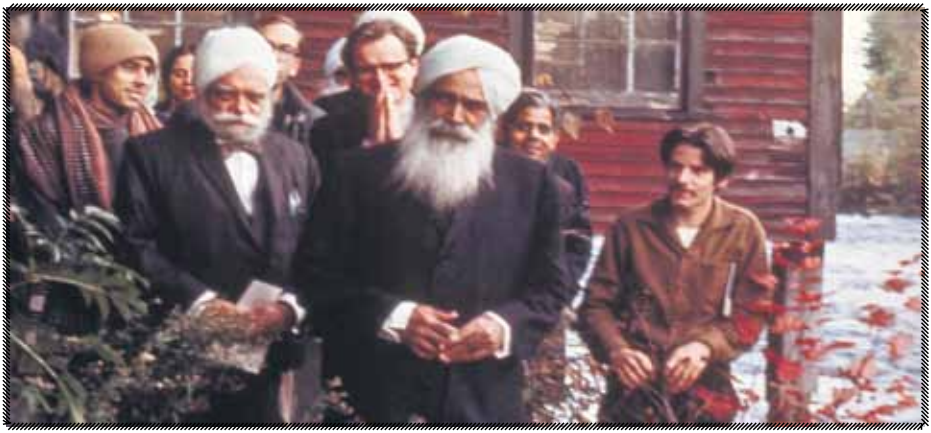

एक प्रेमी : जिन लोगों ने तरक्की की है शायद वे आमतौर पर शान्त रहते हैं और दूसरों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित नहीं करते?

महाराज जी : उन्हें यह परमात्मा का मंदिर इंसानी जामा मिला है, वे परमात्मा का धन्यवाद करते हैं। वे अंदर जाकर अपना समय व्यतीत करते हैं, यकीनन परमात्मा से मिलने में असाधारण आनन्द है।

एक प्रेमी : क्या कोई ऐसे व्यक्तित्व लक्षण हैं जिससे ऐसे व्यक्ति की पहचान हो सके?

महाराज जी : खास बात यह है कि ऐसा व्यक्ति प्यार करने वाला होगा। वह देकर खुश होगा, लेकर खुश नहीं होगा। वह सेवा व त्याग जानता है। वह परमात्मा से प्यार करता है, वह जानवरों से प्यार करता है, वह साँपों से प्यार करता है, वह पक्षियों से प्यार करता है। उसके लिए परमात्मा के परिवार में सब उसके छोटे भाई–बहन हैं। वह बिना किसी सवाल के ऐसी कामना करता है, ''ऐ परमात्मा, तेरे भाणें में समस्त विश्व में शान्ति हो।''

एक प्रेमी : उस मंडल पर पहुंचने के बाद ऐसे व्यक्ति में कोई छल–कपट नहीं बचेगा?

महाराज जी : अहम ही गड़बड़ करता है। मैंने आपको एक उदाहरण दिया था कि पानी में बुलबुला है और वह फूटकर पानी में मिलकर पानी बन जाता है। मैं आपको एक उदाहरण देकर बताता हूँ कि एक नई ब्याही पत्नी अपनी मां से पूछती है, ''मुझे कैसे पता चलेगा कि बच्चा पैदा हो गया है?'' उसकी मां ने कहा, ''जब तुम्हें बच्चा पैदा होगा तो अपने आपसे पूछना।'' जब आप ऊपर जाएंगे तब कुछ कहना। वहां पहुँचकर आप कहेंगे, ''ओह, यह ऐसे है यह वैसे है।'' जब तक आप वहां पहुँच नहीं जाते तब तक आप वहां का कुछ वर्णन नहीं कर सकते।

परमात्मा हमें बुला रहा है, आपको यकीन हो जाएगा कि आपको जिस मार्ग पर डाला गया है वह मार्ग सही है। आपको कुछ झलकें मिली हैं ज्यादा नहीं थोड़े से प्रमाण मिले हैं। अगर अभी कुछ मिल रहा है तो आगे भी उम्मीद कर सकते हैं। बीते हुए और आने वाले समय के बारे में भूल जाएं और यह भी भूल जाएं कि क्या होगा और क्या नहीं होगा?

एक प्रेमी : मेरा हाल उस बच्चे की तरह है जो नर्सरी में है लेकिन फटाफट छठी कक्षा में जाना चाहता है?

महाराज जी : ताकतवर व्यक्ति अपनी ताकत में आनन्द लेता है लेकिन कमजोर व्यक्ति यह आश्चर्य करता है कि उसे ये ताकत कैसे मिली। आपमें से बहुत लोगों को कुछ मिला है दूसरे मत को मानने वालों को भी थोड़ा बहुत अनुभव मिला है। सैंकड़ो ही अखोती गुरु हैं और हजारों लोग उनके पास जाते हैं, वे लोग उनसे आश्वस्त नहीं हैं क्योंकि वे अंदर कुछ नहीं देखते। परमात्मा का शुक्र है कि आपके पास कुछ विश्वसनीय है। सतगुरु मापदंड निर्धारित करते हैंः

जब तक ना देखूं अपनी नैनी, तब तक ना पतीजूँ गुरु की बैणी।

जब इंसान को यकीन ही नहीं कि अंदर में प्रकाश है तो वह पूछेगा कि वहां प्रकाश कैसे हो सकता है? ***

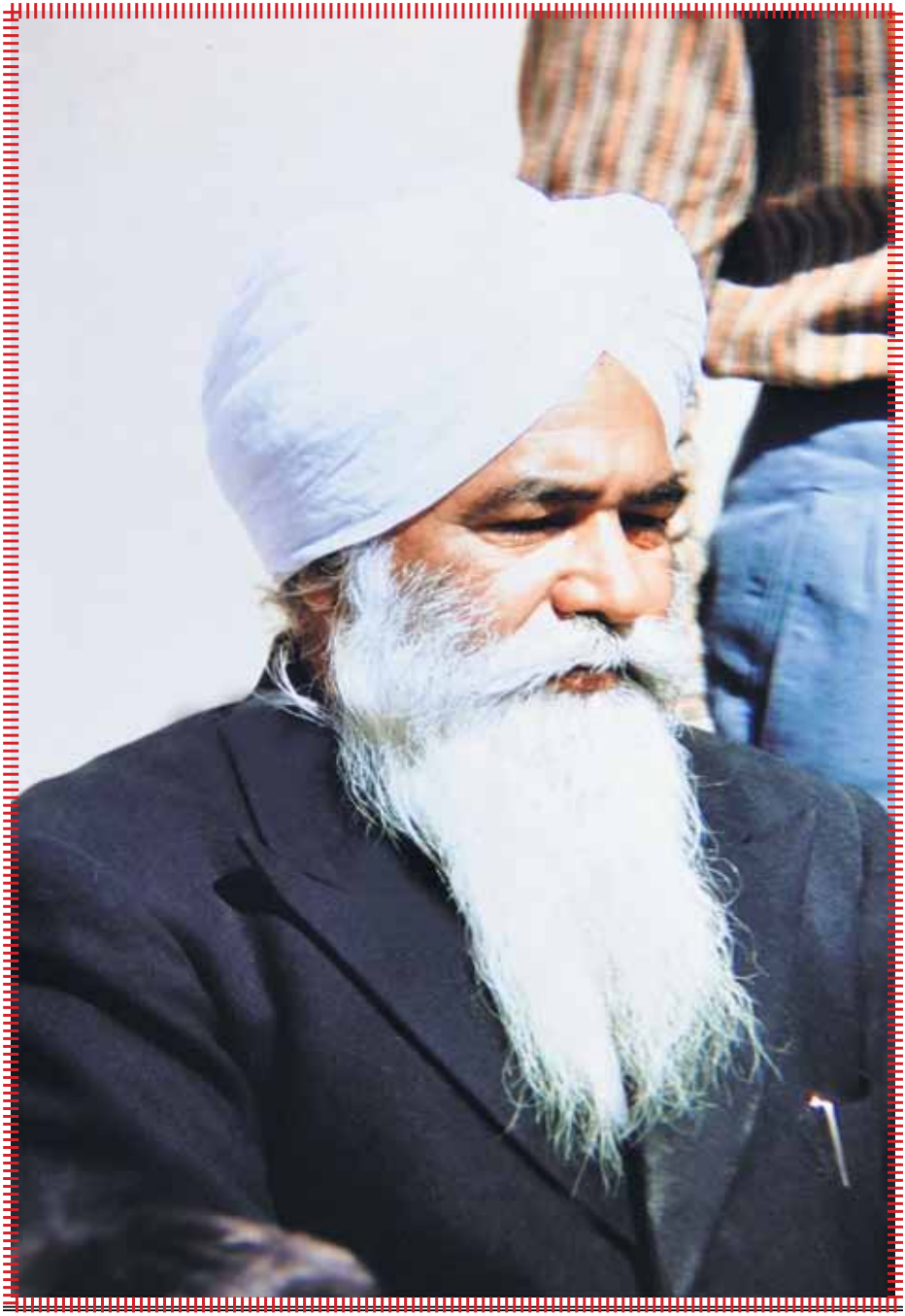

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा की भक्ति

23 जून 1977 | गुरु अर्जुनदेव जी की बानी | ननैमो–अमेरिका

जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ।।
लागू होए दुसमना साक भि भजि खले।।

यह बानी गुरु अर्जुन देव जी महाराज की है। आपको अपनी जिंदगी में सन्तमत से जो प्राप्त हुआ उसे आपने हमारे फायदे के लिए अपना तजुर्बा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज कर दिया।

इंसान बहुत दूर–दूर तक सफर तय करके जाता है कि मुझे कहीं से सुख–शांति मिले और मैं ऐशो–आराम से जिंदगी बिता सकूं। सन्तों को पता है कि दुनिया में हम कभी भी सुख की जिंदगी व्यतीत नहीं कर सकते अगर हमें थोड़ा–बहुत सुख मिलता है तो वह सुख भी आरज़ी है।

हम सोचते हैं कि शायद धनी सुखी होंगे लेकिन महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि हमारे पास जितना ज्यादा धन है उतनी ही हमारे अंदर बेचैनी भी ज्यादा है। धन पाकर कभी कोई इंसान सुखी नहीं हुआ। कुछ दिन पहले अखबारों में आंकड़े छपे थे कि सभी मुल्कों के बैंक अकाउंट स्विजरलैंड में है। स्विजरलैंड बहुत अमीर मुल्क है लेकिन सबसे ज्यादा आत्महत्या उस मुल्क में होती हैं। अगर धनी सुखी होते तो उन लोगों को शांति आ जानी चाहिए थी। सेहजो बाई कहती हैं:

धनवंते अति ही दुखी निर्धन दुख का रूप ।
साध सुखी सेहजो कहे जिन पाया भेद अनूप ।।

धनवान अति दुखी हैं। कहीं दिल में ख्याल हो कि शायद गरीब सुखी होंगे, उनके पास पैसा नहीं। वे बेचारे भी दुखी हैं क्योंकि शाम

को पेट खाने के लिए मांगता है और तन को ढकने के लिए कपड़ा भी चाहिए। वही इंसान सुखी है जो परमात्मा के साथ मिलकर परमात्मा रूप हो जाता है।

इसी तरह हमारे दिल में ख्याल आता है शायद शादी करवाने से शांति आ जाएगी, सुख आ जाएगा। हम शादी करवाते हैं, खुशियां मनाते हैं अगर थोड़े दिनों बाद ही उनमें अभाव आ जाता है, आपस में अनबन हो जाती है तो वही जीवन नर्क बन जाता है।

इसी तरह हम सोचते हैं शायद औलाद के साथ शांति आ जाएगी। जब घर में बच्चे पैदा होते हैं तो हम पार्टियां करते हैं, यार–दोस्तों को बुलाते हैं और जब वही औलाद बड़ी होकर कहना नहीं मानती या मालिक का भाणां परमात्मा उस बच्चे को वापिस बुला ले तो किस तरह शांति भंग हो जाती है। तुलसी साहब कहते हैं:

कोई तो तन मन दुखी कोई नित उदास।
इक–इक दुख सबन को सुखी सन्त का दास ।।

कोई तन करके बीमारी से दुखी हो रहा है। किसी का मन दिन–रात उसे दुखी कर रहा है, वह विषय–विकारों की तरफ दौड़ता है। जब विषय–विकार भोगता है तो बीमारियां लग जाती हैं।

श्री गुरु अर्जुन देव जी हमें इन दुखों से छुटकारा पाने के लिए बहुत अच्छा उपाय बताते हैं कि दुख आने पर जब अति मुश्किल बन जाए और कोई अपने पास खड़ा न होने दे, जब यम हमारे सिरहाने आकर खड़े हो जाते हैं तो उस वक्त रिश्तेदार, बहन–भाई कोई हमारी मदद नहीं करता, सब मुंह फेर लेते हैं कि अब इसका अन्त समय आ गया है। अब यह मिट्टी है, इसे उठाकर कब्र में रख आओ। हजरत बाहु कहते हैं:

इक विछोड़ा मां प्यो भाइयां, दूजा अज़ाब कब्र दा हू।

जब हम अपने सज्जनों से बिछड़ते हैं, जिस तरह घरवाले रोते हैं उसी तरह बेचारा मरने वाला भी मौत के वक्त आंखों से पानी निकालता है, एक तो उनका बिछोड़ा है और आगे अंधेरी कोठरी कब्र में जाना है। वह सफर भी दिखता है कि क्या हालत होगी? हजरत बाहु कहते हैं:

कबरां दे विच अन्न ना पानी ओत्थे खर्च लुढींदा घर दा हू।

आगे जाकर भी खर्चे की जरूरत पड़ती है। वहां कोई अन्न–पानी नहीं, सज्जन–मित्र नहीं जो हमारा इंतजार कर रहा होगा। उस वक्त हम जिन रिश्तेदारों के साथ मोहब्बत करते हैं, जिन चीजों में सुख ढूंढ रहे होते हैं, लड़के भी नजदीक बैठे होते हैं, पत्नी भी पास ही बैठी होती है लेकिन उन्हें पता नहीं कि मौत का फरिश्ता आया कहां से और कान पकड़कर ले कहां गया। वे हमारी क्या मदद कर सकते हैं?

सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ।।
चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न ततती वाउ।।

श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं, ''मौत के वक्त इंसान का हर तरह का सहारा खत्म हो जाता है, डॉक्टर भी जवाब दे देते हैं, घरवाले भी कह देते हैं कि बस, अब तो अंत समय ही है। चम्मच से पानी पिला दो, कोई कहता है कि अब पानी पिलाने की क्या जरूरत है, पानी गले से नीचे नहीं उतरेगा अगर उस वक्त भी यह परमात्मा को याद करे, परमात्मा की भक्ति करे तो इसे नरक की गरम हवा का सेक नहीं सहना पड़ेगा, मालिक उस वक्त भी इसकी सहायता करेगा।''

गुरु नानक साहब तो यहां तक कहते हैं कि जिस वक्त साँस बिल्कुल कंठ में होते हैं, कोई होश नहीं होती अगर उस वक्त भी मालिक को याद करे तो मालिक मदद करता है, सहायता के लिए आ जाता है। अगर हमारा भरोसा है, हममें श्रद्धा है तो हमारे सतगुरु हमें कई दिन

पहले भी बता देते हैं। अभ्यासियों को कई–कई दिन पहले ही अपनी मौत का ज्ञान हो जाता है।

मैं कई बार अमृतसर की कहानी सुनाया करता हूं कि वहां एक लड़की थी जिसे सतगुरु ने आठ दिन पहले ही बता दिया कि तूने फलां दिन चले जाना है। उस लड़की ने अपने रिश्तेदारों को बता दिया कि आज से आठ दिन बाद मेरे गुरु आएँगे, मैं उनके साथ चली जाऊँगी। मोहल्ले में यह बात फैल गई, सब कहने लगे क्या यह लड़की कोई योगी है? मौहल्ले के लोग दिन गिनने लगे कि आज आठ दिन रह गए, आज सात, छह, पाँच, चार दिन रह गए। इसी तरह वास्तव में वह आठवें दिन चोला छोड़ गई। जब हुजूर महाराज वहां गए तो सारा मोहल्ला नाम लेने के लिए तैयार हो गया। हुजूर ने कहा कि आप पक्के हो जाएँ फिर नाम देंगे।

साहिबु निताणिआ का ताणु ।।
आइ न जाई थिरु सदा गुर सबदी सचु जाणु ।।

गुरु साहब कहते हैं कि जिनमें कोई ताण–शक्ति नहीं होती, जिनकी कोई मदद नहीं करता वे सिर्फ उन्हीं लोगों की मदद करने के लिए आते हैं। वे न आते हैं, न जाते हैं वे हमेशा स्थिर हैं। वे शरीर धारण करके आते हैं क्योंकि देह न शिष्य की रहनी है न गुरु की रहनी है। वह ताकत कभी नानक बनकर आती है, कभी कबीर बनकर आती है, कभी सावन शाह बनकर जीवों को तारने लग जाती है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

जोत वो है जुगत वो है सो काया होर पलटिए ।

वही जोत, वही ताकत दुनिया में आती है सिर्फ काया पलटते हैं।

जे को होवै दुबला नंग भुख की पीर।।
दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर।।

गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं कि वह ताकत सिर्फ मौत के वक्त ही नहीं संभालती, जिंदगी में भी हमारी मदद करती है। हमारे पास कोई पैसा–टका न हो बेशक कोई हमें अपने पास भी बैठने न देता हो अगर हम **परमात्मा की भक्ति** करें, परमात्मा को याद करें तो परमात्मा हर तरह से हमारी सहायता करता है।

हम सोचते हैं कि हम अपनी परवरिश खुद कर रहे हैं, जब तक हम अपनी फिक्र खुद करते हैं तब तक वह ताकत हमारी फिक्र नहीं करती। जब हम अपना सारा काम उस ताकत के सुपुर्द कर देते हैं और अपने आपको भजन–सिमरन में लगा देते हैं तो वह ताकत हमारे सारे काम अपने–आप करती है।

सुआरथु सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ।।
चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निहचलु होवै राजु ।।

आप कहते हैं कि वह बेचारा गलियों में धूल की तरह भटकता फिरता हो, कोई उसे नजदीक न बैठने देता हो। गरीब का कौन रिश्तेदार होता है? अगर वह भी **परमात्मा की भक्ति** की तरफ आ जाए तो सृष्टि का राजा बन जाता है, परमात्मा उसके घर कुल पदार्थ भेज देता है।

हिन्दुस्तान में दो मशहूर फिरके मुसलमान और हिन्दू कबीर साहब के खिलाफ थे। उस समय वहां के लोगों ने कबीर साहब को बदनाम करने के लिए इश्तिहार निकलवा दिया कि कबीर साहब के यहां यज्ञ है, हर एक को न्योता दिया जाता है कि वहां आकर भोजन खाएँ। अब दुनिया आने लग गई। कबीर साहब बहुत गरीब थे। कबीर साहब ने कहा, ''देखते हैं कि मालिक क्या चमत्कार करता है।''

कबीर साहब घर से चले गए। परमात्मा ने कबीर साहब का रूप धारण करके हर एक को अच्छे से अच्छा खाना खिलाया बल्कि साथ में

उन्हें दांत घिसाई के रूप में पांच–पांच रुपए भी दिए क्योंकि हिन्दुस्तान में पंडित दांत घिसाई भी लेते हैं कि खीर खाते हुए हमारे दांत घिस गए। जब शाम के वक्त कबीर साहब आए, दुनिया 'धन्य कबीर, धन्य कबीर' कहती जा रही थी। लोग आकर उन्हें कहने लगे, ''आपने तो हमें बहुत आश्चर्यचकित कर दिया, इतनी पब्लिक को अन्न खिलाया और साथ में पैसे भी दिए।'' तब कबीर साहब ने कहा:

ना हम किया ना कर सकें, न कर सके शरीर।
क्या जाना कुछ हर कियो भयो कबीर कबीर।।

देखो भाई, ना मैंने किया है और ना मैं कर ही सकता था, मेरे शरीर में भी हिम्मत नहीं थी। यह सब तो मालिक ने ही किया है जो कबीर–कबीर हो रहा है। यह सब उस मालिक की बड़ाई है, मालिक ही करने वाला हैं। मालिक अपने भक्तों की रक्षा करता है, जिस तरह माता–पिता कुंवारी लड़की का फ़िक्र करते हैं उसी तरह मालिक को हमारा फ़िक्र होता है।

जा कउ चिंता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु।
गृसति कुटंबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु।
गउणु करे चहु कुँट का घड़ी न बैसणु सोइ।
चिति आवै ओसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होइ।।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं, ''अगर किसी को चिंता लगी हुई है कि पता नहीं यम मेरी क्या हालत करेंगे, मेरा क्या हश्र होगा? गृहस्थ में भी उसका रोम–रोम दुखी है और किसी जगह रूक नहीं रहे फिर भी हम **परमात्मा की भक्ति** करें, अपनी आत्मा को रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण से ऊपर ले जाकर मन के पंजे से आजाद कर नाम के साथ जुड़ जाएं तो मन शीतल हो जाता है। दिल में किसी चीज का कोई फिक्र नहीं रहता।''

कामि करोधि मोहि वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु।।
चारे किलविख उनि अघ कीए होआ असुर संघारु।।

गुरु साहब कहते हैं कि इंसान जिन चीजों से परेशान होता है वे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं। पहले तो हम इनसे प्यार कर लेते हैं फिर इनके हाथों दुखी होते हैं। काम के हाथों रूह गिर जाती है, काम के साथ चेष्टा करके हम औलाद पैदा कर लेते हैं फिर उनकी परवरिश करना मुश्किल हो जाता है। इसी तरह क्रोध के वश होकर कत्ल कर देते हैं, जेल जाकर चक्की पीसनी पड़ती है। दुनिया में लड़ाई–झगड़े काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार के वश में आकर ही हो रहे हैं। हमें यही चीजें परेशान कर रही हैं अगर आपको ऐसी परेशानियां भी हैं फिर भी आप नाम की कमाई से ठीक हो सकते हैं।

अगर चार तरह के पाप जैसे ब्रह्म हत्या, शराब पीना, चोरी करना और परस्त्रीगामी किए हों तो शब्द–नाम की कमाई करने से हमारा उद्धार हो सकता है। सन्त यह नहीं कहते कि हमारे पास पुन्नी ही आएँ। वे कहते हैं कि इंसान हो चाहे किसी भी जाति का हो, कितना भी पापी क्यों न हो लेकिन जब नाम ले लिया, उसके बाद कोई भी पाप न करे, वहीं रुक जाए तो उसका सुधार हो सकता है। अगर हम नाम लेकर फिर वही कर्म करते जाएंगे तो हम किस तरह बक्शे जा सकते हैं?

पोथी गीत कवित किछु कदे न करनि धरिआ ।।
चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निमख सिमरत तरिआ।।

गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं, ''हमने कभी पोथी न सुनी हो, कभी अच्छे गीत न सुने हो अगर हम नाम की कमाई करते हैं तो यह हमारे सारे पापों का नाश कर देती है। अगर हम एक सेकंड भी अपनी सुरत को नौ द्वारों से निकालकर आंखों के पीछे लाकर शब्द के

साथ जोड़ देते हैं तो एक सेकंड में भी हमारा उद्धार हो जाता है, हम तर जाते हैं।'' गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज कहते हैं:

एक चित्त जो एक क्षण ध्यावे काल फास के विच ना आवे ।

अगर एक क्षण भी किसी की सुरत शब्द के साथ जुड़ जाती है तो वह काल की फांसी से बच जाता है, जन्म–मरण के दुखों से ऊपर उठ जाता है। गुरु साहब कहते हैं:

जो प्राणी गोविंद धयावै, पढ़या अणपढ़या परम गत पावै।

यहां पढ़ाई–लिखाई का सवाल नहीं। जो शब्द–नाम की कमाई करता है, जिसकी सुरत शब्द के साथ जुड़ जाती है वह अपना बेड़ा पार कर लेता है।

पिछले वक्त में आज की तरह जीपें वगैरह नहीं थी, लोग बैल की सवारी करते थे। एक पंडित बैल पर किताबें लादकर कबीर साहब के साथ बहस करने के लिए गया। कबीर साहब तो घर में नहीं थे, उनकी लड़की कमाली घर में थी। पंडित ने कहा, ''क्या कबीर साहब घर में है?'' कमाली ने कहा, ''तू कबीर साहब को इंसान समझता है?''

कबीर का घर सिखर पर, जहां सिलहिली गैल।
पांव न टिकै पपील का, पंडित लादै बैल।।

कबीर साहब का घर सच्चखंड है, वहां तो चींटी का पैर भी नहीं टिकता और तू बैल पर किताबें लादकर लाया है। पंडित लाजवाब होकर अपने घर वापिस चला गया।

सासत सिंमृति बेद चारि मुखागर बिचरे।।
तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे।।

सन्त–महात्माओं ने बानी ऐसे ही नहीं लिखी, उन्होंने ज़ातिय तजुर्बा किया है कि हम किस तरह तर सकते हैं अगर कोई चार वेद और सारे

शास्त्र मुंह–ज़ुबानी याद कर ले, हर किस्म का तप कर ले और योग साधना भी कर ले फिर भी वह मुक्ति के द्वार तक नहीं पहुंच सकता।

खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ।।
रंगु न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके जाइ।।

यज्ञ करना, यज्ञ करवाना, दान देना, दान लेना, विद्या पढ़नी और पढ़ानी ये हिन्दू मत में छह बड़े कर्म हैं, जिन्हें खट कर्म कहते हैं, लेकिन गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं, चाहे खट कर्मों से दोगुने बारह प्रकार के कर्म क्यों न कर लें अगर सुरत शब्द के साथ नहीं जुड़ी तो जरूर नर्क में जाएंगे, इसमें संशय की कोई बात नहीं। हमने यह अच्छी तरह प्रैक्टिकल करके लिखा है।

पाठ पढ़यो अर बेद बीचारेओ निवल भुअंगम साधे ।
पंच जना सिउ संग न छुटकेओ अधक अहंबुध बाधे ।।

आप कहते हैं, ''हमने पिछले जन्मों में बहुत पाठ किए, वेद विचारे, योगियों वाले सारे कर्म जैसे नियोल कर्म किए लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार कम नहीं हुए बल्कि ज्यादा हो गए।''

पिआरे इन बिधि मिलण न जाई मै कीए करम अनेका।
मोनि भइओ करपाती रहिओ नगन फिरियो बन माही।।

आप कहते हैं कि मैंने ये सारे तरीके करके देखे हैं, हम इस तरह परमात्मा से नहीं मिल सकते। हमने मौनी बनकर भी देख लिया। बहुत से साधु हाथ में कॉपी पेंसिल ले लेते हैं, जुबान से नहीं बोलते, लिखकर माँग लेते हैं। अपने पास बर्तन नहीं रखते। अन्न पत्तों पर डालकर खा लेते हैं, तन पर कपड़े नहीं पहनते। अभी भी हिन्दुस्तान में ऐसे साधु हैं जो कपड़े नहीं पहनते नंगे रहते हैं, हमने नंगे रहकर भी देख लिया है।

तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही ।

आप कहते हैं, ''चाहे आप धरती के एक कोने से दूसरे कोने तक जाकर देख लें फिर भी आपके अंदर जो दुविधा है वह नहीं जाएगी।''

राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण बिसथार।।
बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार।।
रंग तमासे बहु बिधी चाइ लगि रहिआ।।
चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गइआ।।

गुरु साहब कहते हैं, ''चाहे सारी दुनिया का बादशाह है, सारी फौज उसे सलाम करती है, सुंदर बागों की सैर करता है और महलों में नगाड़े बजते हैं अगर **परमात्मा की भक्ति** नहीं करता, परमात्मा को अपने अंदर प्रकट नहीं करता तो वह सांप की योनि में चला जाएगा।''

बहुतु धनाढि अचारवंतु सोभा निरमल रीति।।
मात पिता सुत भाईआ साजन संगि परीति।।
लसकर तरकसबंद बंद जीउ जीउ सगली कीत।।
चिति न आइओ पारब्रहमु ता खड़ि रसातलि दीत।।

गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं, ''सारी दुनिया का धन पास हो, बच्चे और औरत भी अच्छी हो, यार–दोस्तों के साथ अच्छा प्यार हो, जहां भी जाए सब सलाम करते हों कि सब मुझसे प्यार करते हैं अगर वह **परमात्मा की भक्ति** नहीं करता तो कभी नर्क से बच नहीं सकता। परमात्मा ने उसे इतने सुख दिए लेकिन वह परमात्मा को ही भूल गया। जिसकी यह सजा मिलती है कि मालिक उसे फिर नर्क में डाल देता है।''

काइआ रोगु न छिद्रु किछु ना किछु काड़ा सोगु।।
मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु।।
सभ किछु कीतोनु आपणा जीइ न संक धरिआ।।
चिति न आइओ पारब्रहमु जमकंकर वसि परिआ।।

गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं, ''सारी जिंदगी शरीर तंदुरुस्त रहा हो, मौत को कभी याद ही न किया हो, दिन–रात दुनिया के अच्छे भोग भोगे हों, दिल में यह ख्याल ही न हो कि मुझे मौत आनी है अगर वह **परमात्मा की भक्ति** नहीं करता तो मौत ने आकर मुंह दिखा ही देना है, मालिक के मुकर्रर किए हुए यम आकर उसे पकड़ लेते हैं।''

किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु।।

गुरु साहब ने इस शब्द में हमें हर पहलू से समझा दिया कि चाहे हमारे पास दुनिया के कितने भी सुख क्यों ना हों अगर हम **परमात्मा की भक्ति** नहीं करते तो उसकी सजा जरूर मिलती है। परमात्मा जिन पर मेहर करता है, जिन्हें बक्शना चाहता है, जिन्हें अपने साथ मिलाना चाहता है उनकी सोहबत–संगत किसी महात्मा के साथ करवा देता है। महात्मा हमारी सुरत को उस शब्द–नाम के साथ जोड़ देते हैं यही संसार–समुद्र से तरने का तरीका और साधन है।

जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु।।

गुरु साहब कहते हैं कि हम जैसे–जैसे साधु के साथ प्यार करेंगे वैसे–वैसे हमारे ऊपर नाम का रंग चढ़ना शुरू हो जाएगा। परमात्मा जब भी जीवों को तारता है, किसी महात्मा का तन धारण करके इस दुनिया में आता है।

दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ।।

गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं, ''वह मनमुख और गुरुमुख, दोनों का मालिक है। जिन्हें सन्तों की संगत में लाना है, उनसे प्यार करवाना है यह उसके हाथ में है। जिन्हें संगत से दूर रखना है, सन्तों का विरोधी बनाना है यह भी उसके हाथ में है, उसके बगैर कोई चाबी नहीं घुमाता। दोस्त और दुश्मन में भी वही है, तारने वाले में भी वही है और जिसे दूर करना है उसके अंदर भी वही है।

आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि कि उरोवंनि ।।

आप कहते हैं, ''हे परमात्मा, अगर आपसे मिल लेना हमारे वश में होता तो हम आपसे बिछुड़कर रोते क्यों फिरते।''

सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ।।

नाम न बिकता है, न खेत में उगता है और न किसी धर्म पुस्तक में मिलता है। नाम सतगुरु से मिलता है, सतगुरु नाम के भंडारी बनकर आते हैं। मालिक जिसे तारना चाहता है उसे महात्मा के पास लाता है, महात्मा नामदान की बक्शीश करते हैं, सब कुछ परमात्मा के हाथ में है। गुरु साहब कहते हैं:

करम होवै सतगुरु मिलाए, सेवा सुरत शबद चित लाए ।

जब हमारा कोई कर्म जागता है, परमात्मा हमारे ऊपर दया–मेहर करता है तो उसी वक्त हमारा मिलाप सतगुरु के साथ करवाता है। सतगुरु हमारी सुरत को शब्द–नाम के साथ जोड़ देते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

जा दिन भेटे साध संग मोहि उआ दिन बलिहारी ।

जिस दिन मेरा मिलाप किसी महात्मा के साथ हुआ मैं उस दिन को बलिहार जाता हूं, कुर्बान जाता हूं। मेरी जिंदगी का वही दिन अच्छा था जिस दिन मुझे किसी महात्मा ने नामदान बक्श दिया और सच्चखंड का संदेश दे दिया। कबीर साहब कहते हैं:

कबीरा घाणी पीड़ते सतगुर लीए छडाइ ।
परा पूरबली भावनी परगट होई आइ ।।

यम हमें कोल्हू में कष्ट दे रहे थे, सतगुरु ने छुड़ा लिया। हर मौत के बाद हमें धर्मराज के पास जाना पड़ता था, हमारे पिछले कर्म ही जाग गए, परमात्मा को दया आई हमारा मिलाप ऐसे साधु के साथ करा दिया।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

कंजूस

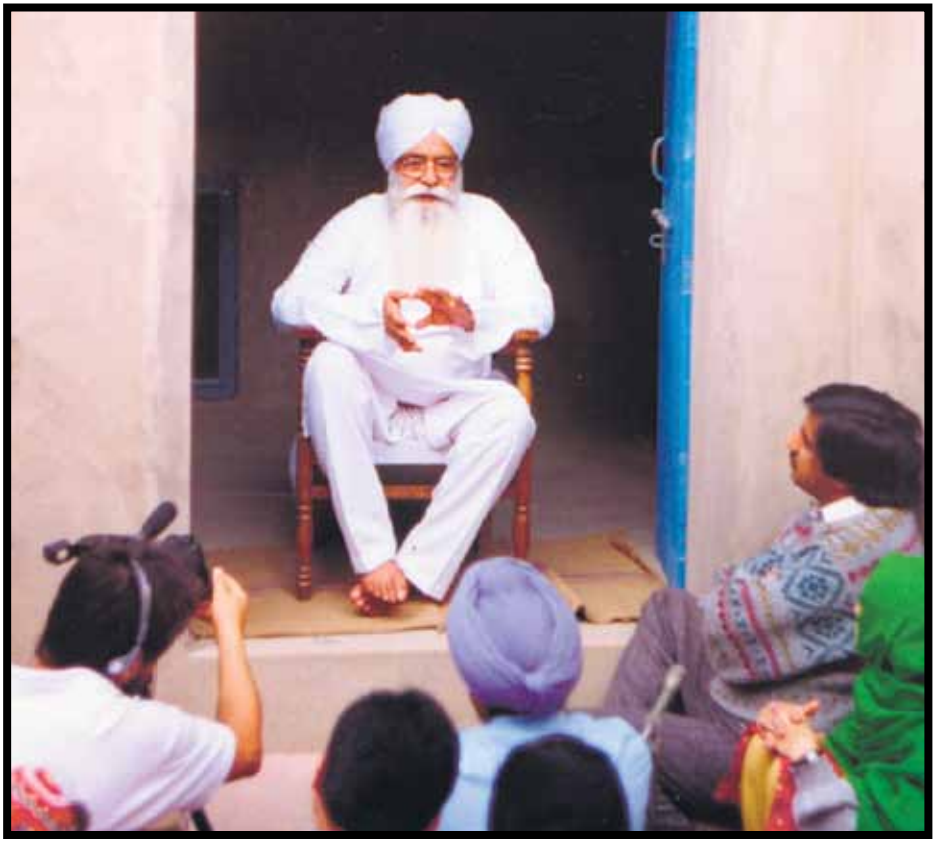

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया, अपनी भक्ति का दान दिया। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सन्तों की कथा–कहानियाँ जिन्हें रास आती हैं, वे उन कहानियों को अपने जीवन में ढाल लेते हैं और अपनी जिंदगी सफल बना लेते हैं।'' सन्त उस दरबार की जानकारी देने के लिए आते हैं जहाँ बिना माँगे वस्तु मिलती है, जहाँ हाथ पसारने की जरूरत नहीं पड़ती।

जब हम अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं, तब गुरु अपनी बरकतें लेकर हमारे अंदर प्रकट हो जाता है। उसे पता है कि यह बच्चा मेरे आसरे है और इसे किस चीज की जरूरत है। जब आपकी जरूरत को पूरा करने वाला आपके अंदर बैठा है तो आपको हाथ पसारने की क्या जरूरत है?

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''मैं जो कुछ बोलता हूँ, वह इस धरती पर सच है और आगे भी सच है। गुरु का वचन कभी फनाह नहीं होता। सेवक गुरु से ऐसी वस्तु नहीं माँगता जो दुनिया में नाश होने वाली है। सेवक गुरु से गुरु को ही माँगता है।''

हमें चाहिए कि सिमरन के जरिए हम अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर उस जगह पहुँचे, जहाँ वह दाता दान कर रहा है, दया लेकर खड़ा है और दया देने के लिए तैयार है। सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैंः

ओह प्रभ साडा सखी है असी सेवा कनियों शूम

देने वाला सखी है। वह दिन–रात इंतजार में हैं, वह देना ही जानता है लेकिन हम सेवा की तरफ और भजन की तरफ से **कंजूस** बने बैठे हैं।

प्यारयो, कभी भी भजन की तरफ से **कंजूस** न बनें। कंजूस का तो नाम ही बुरा है, खुले दिल से अपना भजन–सिमरन करें ताकि वह दाता कृपाल जो दया करता है, वह हम पर जरूर दया करे और हम उनकी दया को प्राप्त करें। हाँ भई, आँखे बंद करके अपना सिमरन करें।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

हम सोचते हैं कि हम अपनी परवरिश खुद कर रहे हैं, जब तक हम अपनी फिक्र खुद करते हैं तब तक वह ताकत हमारी फिक्र नहीं करती। जब हम अपना सारा काम उस ताकत के सुपुर्द कर देते हैं और अपने आपको भजन-सिमरन में लगा देते हैं तो वह ताकत हमारे सारे काम अपने-आप करती है।